जब आसमान गिरा

हेरिएट , चित्र : एमिली, हिंदी : विदूषक

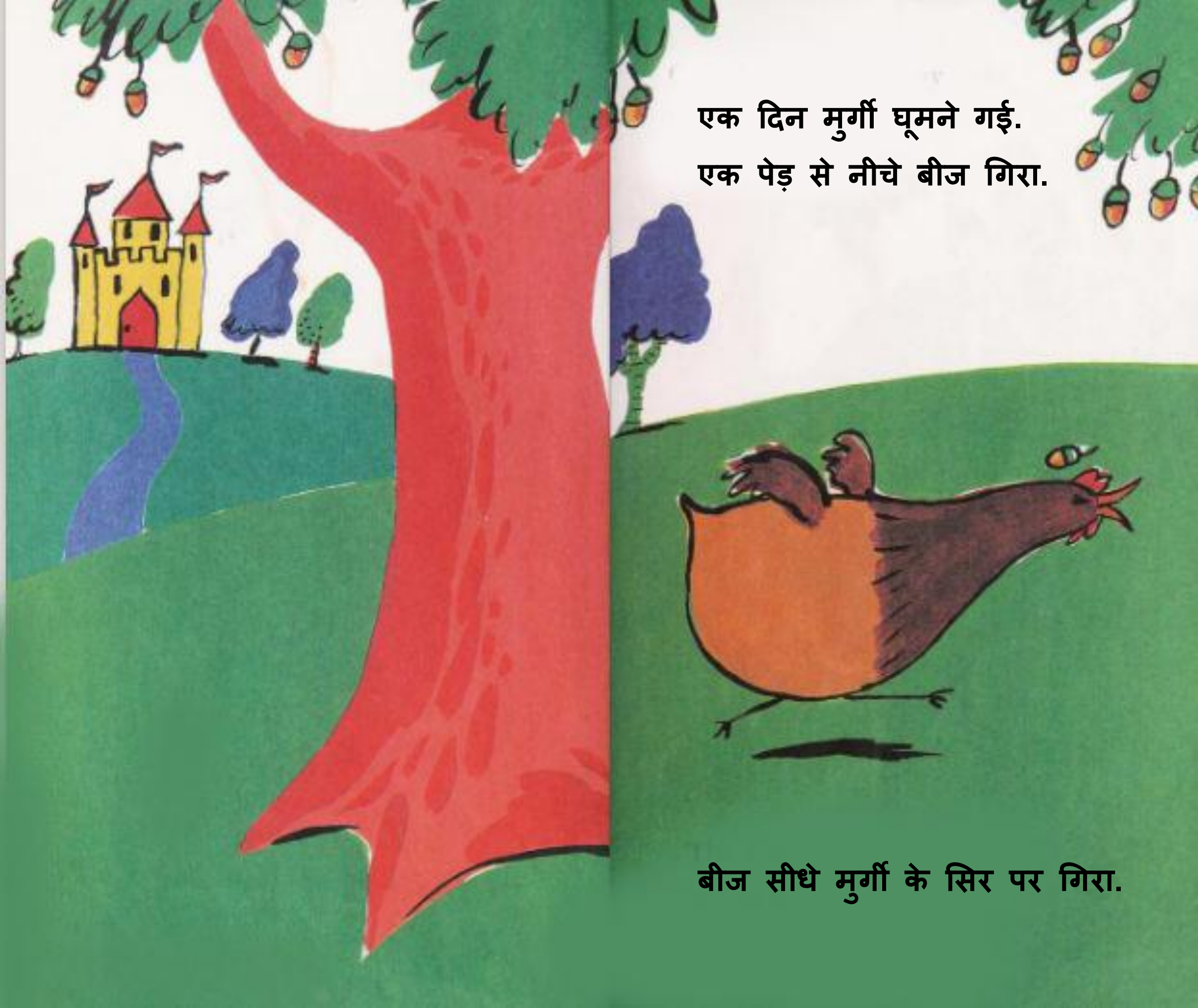

एक दिन मुर्गी घूमने गई.
एक पेड़ से नीचे बीज गिरा.

बीज सीधे मुर्गी के सिर पर गिरा.

“अरे बाप रे!” मुर्गी चिल्लाई.
“लगता है आसमान गिर रहा है.
मुझे राजा को जाकर उसके बारे में
तुरंत बताना चाहिए.”

रास्ते में उसकी मुलाकात मुर्गे से हुई.

“तुम कहाँ जा रही हो,” मुर्गे ने पूछा.

“मैं राजा को बताने जा रही हूँ
कि आसमान गिर रहा है.” मुर्गी ने कहा.

“मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ,”
मुर्गे ने कहा.

रास्ते में उनकी भेंट बत्तख से हुई.
“तुम लोग कहाँ जा रहे हो,”
बत्तख ने उत्सुकतावश पूछा.

“हम राजा को बताने जा रहे हैं कि
आसमान नीचे गिर रहा है,” उन्होंने कहा.

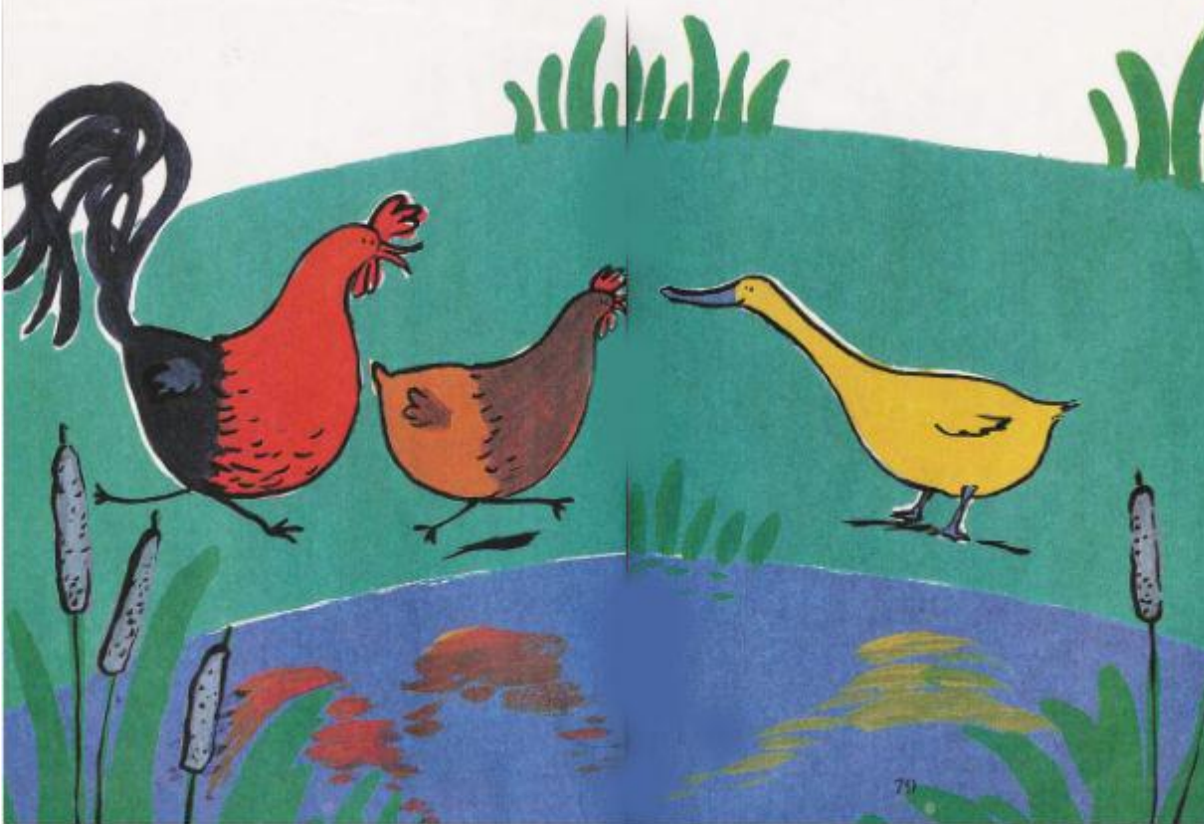

“मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूँ,”
बत्तख ने कहा.

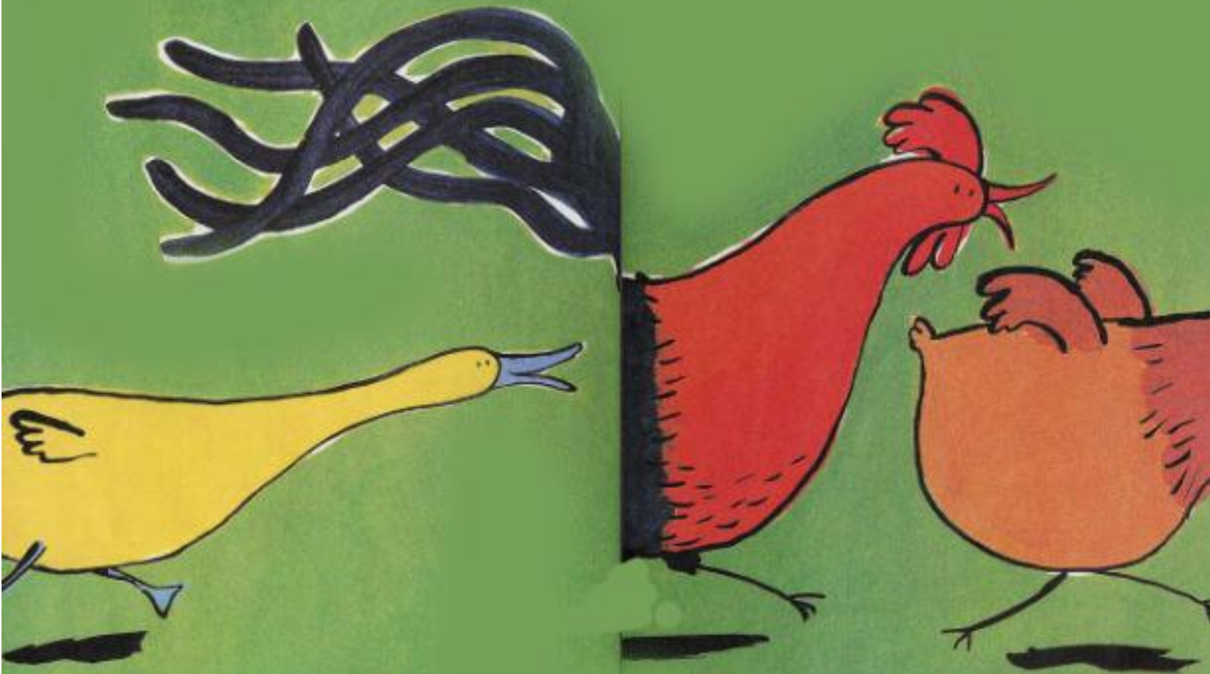

रास्ते में उन्हें हंस मिला.

“तुम लोग कहाँ जा रहे हो?” हंस ने पूछा.

“हम राजा को बताने जा रहे हैं कि आसमान नीचे गिर रहा है,” उन्होंने कहा.

“मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ,”
हंस ने कहा.

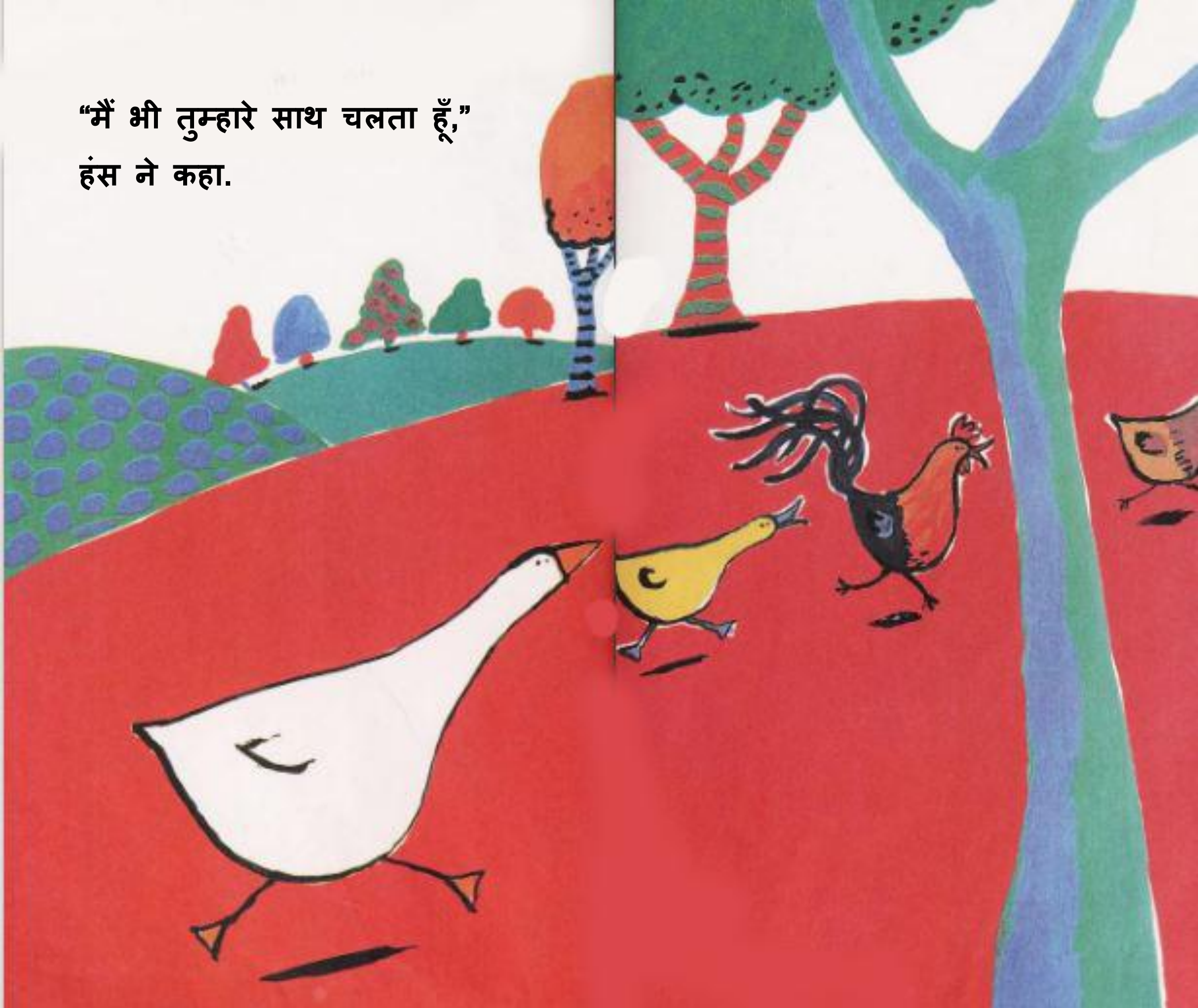

रास्ते में उन्हें लाल कलगी वाली बत्तख मिली.

“तुम लोग कहाँ जा रहे हो?” लाल कलगी वाली बत्तख ने पूछा.

“हम राजा को बताने जा रहे हैं कि आसमान नीचे गिर रहा है,” उन्होंने कहा.

“मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूँ,” लाल कलगी वाली बत्तख ने कहा.

उसके बाद उन्हें लोमड़ी मिली.
“तुम लोग कहाँ जा रहे हो?”
लोमड़ी ने पूछा.

“तुम लोग सही रास्ते से नहीं जा रहे हो,”
लोमड़ी ने कहा.
“मैं तुम्हें सही रास्ता बताऊंगी.”

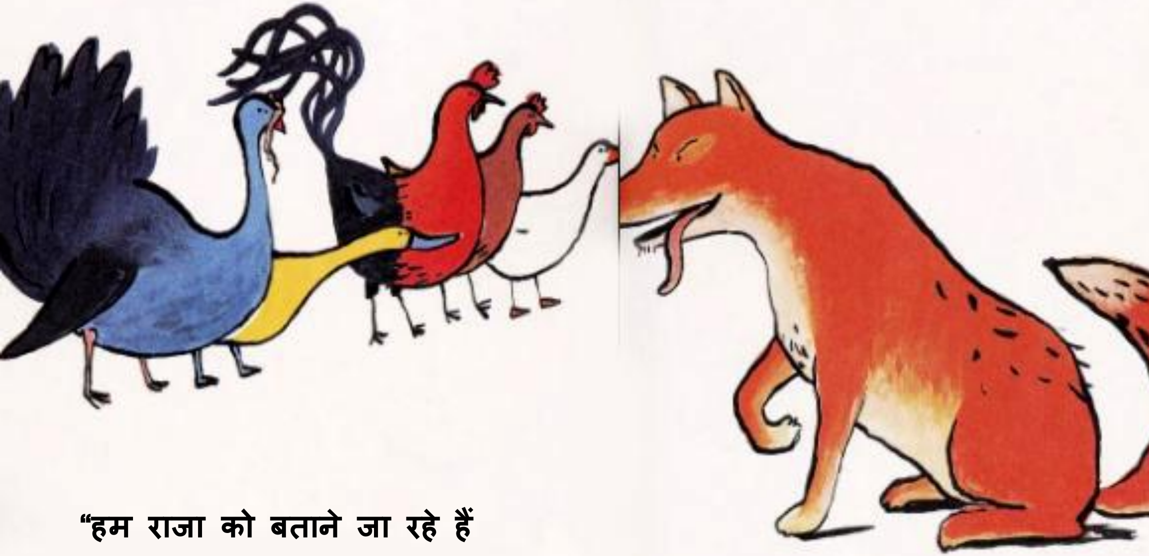

“हम राजा को बताने जा रहे हैं
कि आसमान नीचे गिर रहा है,”
उन्होंने कहा.

फिर वे सभी लोमड़ी के पीछे-पीछे चलने लगे.

फिर लोमड़ी ज़मीन में एक बड़े छेद के पास आकर रुकी. “यह सुरंग तुम्हें सीधे राजा के पास ले जाएगी,” लोमड़ी ने कहा.

सुरंग में सबसे पहले लोमड़ी घुसी.
उसके पीछे लाल सिर वाली बत्तख घुसी.

हंस उसके पीछे गया.

बत्तख, हंस के पीछे-पीछे गई.

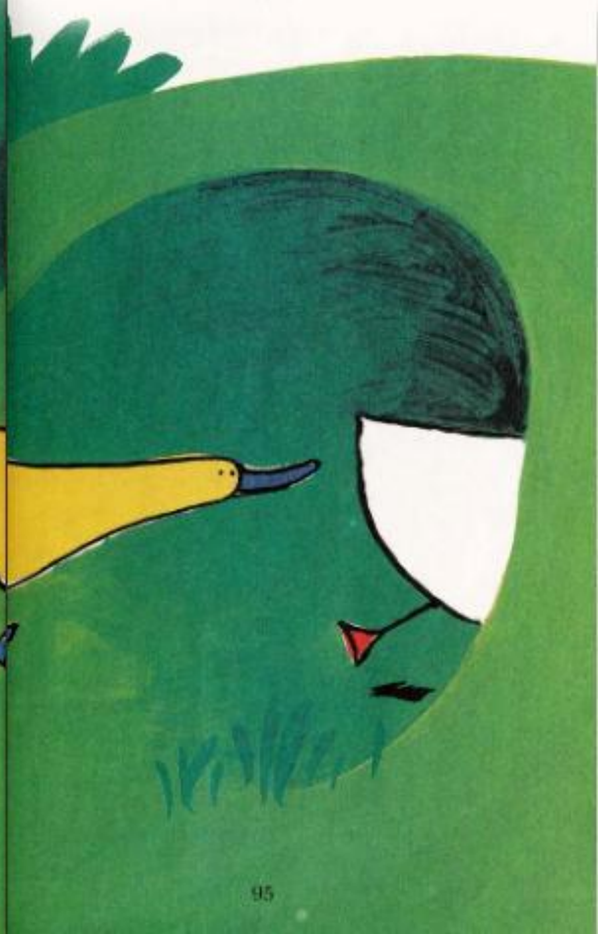

मुर्गा सबसे अंत में गया.
मुर्गी ने मुर्गे की चीख सुनी,
“भागो! भागो यहाँ से मुर्गी!”

कुकड़ू-कूँ

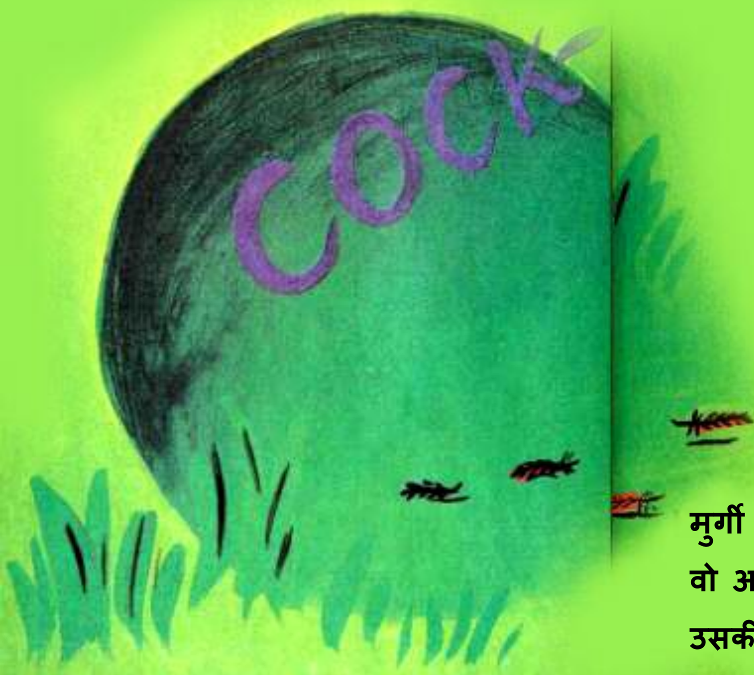

मुर्गी भागी. वो बहुत तेज़ी से दौड़ी.
वो अपनी जान बचाकर वहां से भागी.
उसकी तकदीर अच्छी थी.

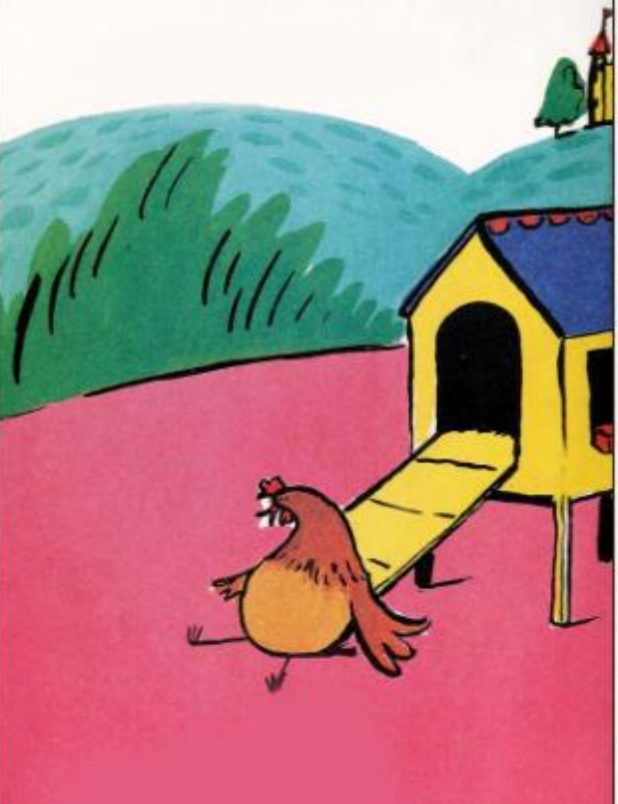

दौड़ते-दौड़ते वो अपने घर पहुंची.
फिर आसमान के गिरने वाली बात
उसने राजा को कभी नहीं बताई.